13

बसोर का सैनिक

छोटी सी सेवा का प्रतिफल मिला

(30:21–25)

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान ''घर में मोरचा'' की बात आम सुनी जा सकती थी। संदेश स्पष्ट था और उस युग के एक विलक्षण अगुवे ने इसका अर्थ इस प्रकार निकाला था: ''खड़े होकर प्रतीक्षा करने वाले भी सेवा करते हैं।'' इसका अर्थ स्पष्ट था। आपका छोटे से छोटा काम भी युद्ध के प्रयास में आपकी सहायता ही माना जाएगा। हर अमरीकी उस समय चाहे देश में हो या देश से बाहर ''घर में मोर्चा'' लगाए हुए था।

30:21–25 में सेवा की ऐसी ही समरूपता मिलती है। दाऊद और उसकी छह सौ लोगों की सेना राख का ढेर खण्डहरों में आराम पाने के लिए सिकलग में चले गए थे। उनके घर राख का ढेर बन चुके थे, उनके परिवार बन्दी बना लिए गए थे और उनकी सज़्पज़ि लूट ली गई थी। युद्ध के विनाश से सैनिकों के इस दल को गहरा सदमा पहुंचा (30:4)। परमेश्वर से पूछने के बाद, दाऊद ने यह हमला करने वाले अमालेकियों का पीछा किया। उसके सिपाही थक चुके थे। भावुक होकर दो सौ सिपाहियों को युद्ध के लिए गैर ज़रूरी वस्तुओं की देखभाल के लिए बसोर के नाले के पास रोक दिया गया। बाकी चार सौ सिपाहियों ने थोड़ी देर बाद ही हमला करने वालों को पकड़ लिया और अपन चीज़ें वापस ले लीं। बसोर में वापस लौटने पर चार सौ सिपाहियों ने बहस की कि ''सामान की रखवाली'' के लिए रुकने वाले दो सौ लोगों का लूट में कोई भाग नहीं है। उनके इस तीखे व्यवहार से 30:22–24 के शज़्द लिखने की प्रेरणा मिली।

इससे हमें सर्वशज़्तिमान परमेश्वर की सेवा के बारे में एक ज़बर्दस्त सिद्धांत मिलता है। उन चार सौ के शज़्दों में सेवा को नकारात्मक पहलू से देखा गया था। हमें एक अद्‌भुत समझ मिलती है कि मनुष्य अपनी बुद्धि से कुछ सेवाओं को किस प्रकार देखता है और उन्हीं सेवाओं को परमेश्वर कितना महत्व देता है।

सिद्धांत की व्याज़्या

उन चार सौ की बातें सुनकर दाऊद ने तुरन्त गलती को सुधारा। दाऊद के विचार से प्रयास सब ने मिलकर किया था। उनमें से कुछ कोई काम कर पाए जबकि दूसरों ने कोई और किया था। कोई वास्तव में युद्ध में गया हो या उसने सामान की रखवाली की हो, दाऊद

के विचार से वह एक जैसी सेवा कर रहा था!

यह सिद्धांत बाइबल की कई आयतों में मिलता है जिससे कोई भी कार्य करने वालों के बारे में परमेश्वर के विचार का पता चलता है चाहे वह कार्य "कितना भी छोटा" क्यों न हो! जकर्याह 4:10 में मन्दिर बनाने का काम साधारण सी साहुल से होना था। परमेश्वर दीवार को साहुल से देखने वालों के काम से प्रसन्न था। मरकुस 14:8 में, जब मरियम ने यीशु का अभिषेक किया तो उसने वही किया जो वह कर सकती थी। किसी को उसका यह काम बेकार लगा था परन्तु हमारे प्रभु को नहीं! यूहन्ना 6:9 में थोड़े से भोजन का जो अन्द्रियास को अधिक नहीं लगा था, प्रभु द्वारा एक बड़े उद्देश्य को पूरा करने के लिए इस्तेमाल किया गया। जो बहुत छोटा तथा तुच्छ लगता है आम तौर पर उसकी अनदेखी की जाती या उसे नगण्य समझा जाता है, परन्तु प्रभु उन्हीं का इस्तेमाल करता है (मत्ती 10:43; मरकुस 9:41; आदि)। परमेश्वर की दृष्टि में *कोई भी* सेवा महत्वपूर्ण है!

सिद्धांत व्यवहार में लाया गया

दो सौ सिपाही अनावश्यक चीज़ों की देखभाल के लिए रुक गए थे। इससे दाऊद को अमालेकियों पर विजय जल्दी पाने के लिए आगे बढ़ने में सहायता मिली। उन दो सौ लोगों ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी जो विजय के लिए आवश्यक थी। विजय पाने के बाद दाऊद ने वापस आकर बसोर में उन दो सौ का अभिवादन किया। उसके अभिवादन से हमें समझ आती है:

हम में से हर कोई सेवक है और हर किसी को उसकी योग्यता के अनुसार काम मिलता है। इन सिपाहियों को सामान की रखवाली करने के लिए रुकने को कहा गया था। इनका काम महत्वपूर्ण था। बहुत से लोग इस पाठ को समझने में नाकाम रहते हैं क्योंकि हम सेवाओं का वर्गीकरण करके उन्हें उनके "महत्व" के अनुसार देखना चाहते हैं।

कुरिन्थुस में ऐसे व्यवहार के भयंकर परिणाम हुए थे, पौलुस के पत्र में इस गलती का सामना करने के लिए तीन ज़बर्दस्त बातें कहीं गई हैं (1 कुरिन्थियों 12:12-28)। पहली, हर अंग में अलग गुण है परन्तु है वह बराबर ही (1 कुरिन्थियों 12:15)। दूसरी, हर अंग दूसरे अंगों से जुड़ा हुआ है (1 कुरिन्थियों 12:26; कुलुस्सियों 2:2)। तीसरी, "सबसे साधारण" समझा जाने वाला सबसे महत्वपूर्ण है (1 कुरिन्थियों 12:22-24)।

एक बार, पशुओं के एक समूह ने एक स्कूल शुरू करके अपने सुधार का निर्णय लिया। स्कूल में तैराकी, दौड़, चढ़ाई चढ़ना और उड़ान भरना शामिल था। बज़ख, जो शानदार तैराक है, दूसरे बातों में कमज़ोर थी, सो उसने अपनी तैराकी को छोड़ चड़ाई चढ़ने, दौड़ने और उड़ने का विषय लिया। खरगोश को, जो अच्छा धावक है, अन्य कक्षाओं में अधिक समय देने के लिए कहा गया और गति की उसकी चाल धीमी हो गई। गिलहरी, जिसे चढ़ाई चढ़ने में "ए" ग्रेड मिलता था उसके शिक्षकों द्वारा तैरने और उड़ने की कोशिश करने के लिए घंटों बिताने के लिए कहने के कारण "सी" ग्रेड में आ गई। बाज़ को पेड़ों के सिरों पर चढ़ना सिखाया गया, चाहे इससे पहले वह उड़कर जा सकता था। यही दुखद

तस्वीर कलीसिया की है। हर एक को अलग अलग दान मिले होते हैं, परन्तु कुछ लोग अपने दानों से बढ़कर पाने का प्रयास करते हैं और जब ''बड़े काम'' नहीं कर पाते तो अपने आप में हीन महसूस करते हैं (तु. रोमियों 12:6)। बसोर के संदेश से इस फिलॉस्फी को गलती माना गया है, ज़्योंकि अलग अलग योग्यताएं होने के बावजूद सब समान हैं!

कलीसिया में सेवा में विभिन्नता परमेश्वर की योजनाओं को पूरा करने के लिए आवश्यक है। ''बसोर में बैठ'' कर खीझना कि आप युद्ध के मैदान में नहीं गए बेकार है। परेशान होना कि जो काम दूसरा कर रहा है वह आप नहीं कर सकते फिज़ूल है। परमेश्वर की सेना ने सिपाहियों के रूप में हमारी दिलचस्पी को सभोपदेशक 9:10 में संक्षिप्त कर दिया गया है। हम केवल उसी के लिए जिज़्मेदार हैं जो हम व्यज़्तिगत तौर पर कर सकते हैं। किसी अज्ञात कवि की कविता का यह अनुवाद निजी कर्तव्य की ज़िज़्मेदारी ज़्यान करता है।

सूर्यास्त

तुम ने दिन व्यर्थ गंवाया या उसका लाभ उठाया?
इसका इस्तेमाल अच्छा हुआ या यह यूं ही गया?
तुम ने सूरज की किरण छोड़ी है,
या निराशा का दाग़?

सोने के लिए आंखें बंद करते हुए
ज़्या तुज़्हें लगता है कि परमेश्वर कहेगा,
तुम ने आज काम करके अपने लिए
एक और कल कमा लिया है?

परमेश्वर की अव्यज़्त तथा अप्रत्यक्ष सेवा महत्वपूर्ण है। ''दिखाई देने वाली जगहों'' में सेवा करने की अपनी योग्यता न दिखा पाने वाले लोग चुपके से अदृश्य सेवाएं कर सकते हैं जिनका परमेश्वर के राज्य में बहुत महत्व है। हो सकता है कि प्रचारक तथा ऐल्डर सामने होकर काम करें, परन्तु परमेश्वर भज़्त माताओं, परमेश्वर का भय रखने वाले पिताओं, शांत और समझदार पवित्र लोगों, अपनी दमड़ी देने वाली विधवाओं तथा उनके लिए दिन रात प्रार्थनाएं करने वाले लोगों के बिना वे किस काम के हैं? कलीसिया इसलिए मजबूत है ज़्योंकि बहुत से लोग ''बसोर के नाले के पास'' चुप करके सेवा कर रहे थे! (सभोपदेशक 9:10)।

हमारी सेवा का परिणाम अनन्त पहचान के रूप में मिलेगा। बसोर में वापस आने पर दाऊद ने सामान की रखवाली करने वाले उन लोगों का अभिवादन किया या उन्हें सलाम किया (30:21)। यह सलाम उनके सज़्मान तथा उनमें रूचि को दिखाता था। ऐसा करके उसने मूसा (गिनती 31:27) और यहोशू (यहोशू 22:8) का अनुसरण किया। दाऊद द्वारा पहचान देना तो बड़ी बात है ही परन्तु मसीह के लिए सेवा करने वालों को इससे भी बड़ी पहचान मिलने वाली है (मज़्ी 10:2; 25:35, 36)। अन्त के दिन मसीह द्वारा मधुर आवाज

में पहचानने की बात सुनकर कितना अच्छा लगेगा (मरकुस 14:8)। यह पहचान केवल उन्हीं लोगों को मिलेगी जो बसोर के नाले के सिद्धांत का पालन करते हैं।

सिद्धांत की चुनौती

सिद्धांत जितना बड़ा है उतनी ही बड़ी चुनौती इसमें है जो इसे व्यवहार में लाने में रोकती है। जकर्याह 4:10ख में इस चुनौती को "तुच्छ जाना" कहा गया है। "तुच्छ" का अर्थ तिरस्कार से देखना, महत्वहीन वस्तु के रूप में देखना, या किसी चीज़ के साथ कम महत्व जोड़ना है। 30:22 में यही हुआ। सामान के पास ठहरने वालों को घटिया लोग माना गया। सेवा के महान सिद्धांत को दबाने के लिए घमण्ड, स्वार्थ तथा अज्ञानता सब मिल गए। अफसोस आज भी ऐसा ही हो रहा है।

दो विशाल क्षेत्रों में, सेवा के सिद्धांत को चुनौती दी जाती है और अक़्सर पराजय मिलती है। पहला, समझ की कमी अक़्सर "सामान के पास ठहरने" वालों को हतोत्साहित करती है (मत्ती 18:6)। हमें यह समझना चाहिए कि चाहे कोई भी काम करके सेवा क्यों न करें हम सब परमेश्वर की सेवा कर रहे हैं! यह समझ हमें उन *सभी* कार्यों पर विचार करने के योग्य बनाएगी जो किए जा रहे हैं!

दूसरा, "सामान के पास ठहरने" वालों के प्रति उदासीनता अक़्सर दिखाई जाती है (30:22)। युद्ध से लौटकर आने वालों का सामान के पास रहने वालों के प्रति व्यवहार ध्यान से देखें। वे उनके साथ कठोर, कड़ा, और अनादरपूर्वक व्यवहार कर रहे थे। उन्होंने अपने साथियों पर बुड़बुड़ाकर उनके साथ क्रूरतापूर्वक व्यवहार करके अपने आप को उने बढ़कर समझा! दाऊद ने इसके बिल्कुल विपरीत उनका अभिवादन किया और उनके प्रति दयापूर्ण सहानुभूति दिखाई (30:21)।

सारांश

मसीह की कलीसिया में हम में से हर एक को सेवा दी गई है। इसलिए हम सब को वही करना चाहिए जो हम कर सकते हैं (1 तीमुथियुस 1:12; लूका 12:42, 43, 47, 48; मरकुस 14:8)।

प्रभु की कलीसिया में आप जो सेवा करते हैं उस पर विचार करें। जो सेवा भी आप कर सकते हैं वह करें ताकि आराधना सभाओं में भक्तिपूर्ण तथा सुधार लाने वाला वातावरण बन सके। आम तौर पर आराधना के समय के बारे में "छोटी-छोटी बातें" बाहर से आने वाले व्यक्ति पर अमिर प्रभाव छोड़ती हैं। खोए हुओं को यह दिखाने के लिए कि मसीह आप में रह रहा है जो भी आप कर सकते हैं करें। अक़्सर "छोटी-छोटी बातों" से दूसरे का भरोसा जीता जा सकता है और भविष्य में इसी समय उसके मन परिवर्तन का मार्ग तैयार हो सकता है। अपने भाइयों को उत्साहित करने के लिए जो भी आपसे बन पड़ता है, करें। अक़्सर "छोटी-छोटी बातें" दया तथा विचार करने की प्रेरणा से ही बनती हैं जो उदास मनों में जोश तथा समर्पण फिर से भरती हैं।

बसोर के सैनिकों ने सेवा के बारे में हमें महत्वपूर्ण सबक सिखाया है। उपयुक्त सेवा का प्रतिफल अवश्य ही बड़ा होगा, ज़्योंकि ''सबको बराबर भाग मिलेगा।'' आप जो भी कर सकते हैं करें, दूसरों की ''छोटी-छोटी बातों'' के प्रति संवेदनशील हों और उनके प्रयासों में लगे रहने के लिए उनकी हिज़्मत बढ़ाते रहें।

ब्रूस बार्टन ने अब्राहम लिंकन के जीवन के एक घटना बताई जो बसोर के विजयी व्यवहार का चित्रण करती है। गृह युद्ध की ताज़ा जानकारी की खोज में लिंकन, जनरल मैज़्लेलन को ढूंढ़ रहे थे। राष्ट्रपति तथा कैबिनट सदस्य के घर आने के समय मैज़्लेलन घर में नहीं थे, सो लिंकन ने एक घंटे तक प्रतीक्षा की। आखिर सैनिक आ गए। लिंकन को सलाम करने के बजाय वह सीढ़ियां चढ़कर अपने बैडरूम में चले गए और यह बताने के लिए कि वह बहुत थक गए हैं इसलिए राष्ट्रपति को नहीं मिल सकते एक नौकर को भेज दिया। लिंकन का साथी गुस्से से लाल पीला होने लगा, परन्तु लिंकन ने उसके कंधा थप-थपाते हुए कहा, ''इतना गर्म होने की आवश्यकता नहीं है। यदि मेज़्लेलन हमें विजय दिला दे तो मैं उसका थोड़ा रख लूंगा।''